the srijan school

कक्षा - नवमी (IX)

विषय - संस्कृतम्

सप्तमः पाठः - 'तरवे नमोऽस्तु'

(अन्वयः, श्लोकार्थाः च)

श्लोक-1. - "छायामन्यस्य ------------- सत्पुरुषा इव ॥"

अन्वयः - अन्यस्य छायाम् कुर्वन्ति, स्वयम् (च) आतपे तिष्ठन्ति; फलानि अपि परार्थाय (यच्छन्ति), वृक्षाः सत्पुरुषाः इव (भवन्ति)॥

अर्थः - दूसरों के लिए छाया करते हैं और स्वयं धूप में रहते हैं, फल भी दूसरों को (देते हैं), वृक्ष सज्जनों के समान होते हैं।

←→

श्लोक-2. - "अहो! एषां ---------------- नार्थिनः ॥"

अन्वयः - अहो! एषां सर्व - प्राणि - उपजीवनम् जन्म वरम्। महीरुहाः धन्याः, येभ्यः अर्थिनः निराशाः न यान्ति।

अर्थः - अरे! सभी प्राणियों के आश्रय, इन वृक्षों का जन्म श्रेष्ठ है। वृक्ष धन्य हैं, जिनसे, माँगने वाले (याचक) कभी भी निराश नहीं होते।

←→

श्लोक-3. - "पत्र - पुष्प - फलच्छाया ---------कामान्वितन्वते ॥"

अन्वयः - पत्र - पुष्प - फल - छाया - मूल - वल्कल - दारुभिः, गन्ध - निर्यास - भस्म - अस्थि - तोक्मैः कामान् वितन्वते ॥

अर्थः - (वृक्ष) पत्ते, फूल, फल, छाया, जड़, छाल व लकड़ी से, तथा गन्ध, गोंद (रस), कोयला और राख [भस्म] और छालों से लोगों की इच्छाओं को पूरा करते हैं।

←→

श्लोक-4 : "आम्र! यद्यपि .... दलयस्यतितापम्॥"

अन्वयः – (हे) आम्र! यद्यपि, ते, दिवसाः, गताः, ये, पुष्पसौरभफल-प्रचुराः (आसन्)। हन्त! तथापि, सम्प्रति, जनानां, अतितापम्, छायया, एव, दलयसि॥

अर्थः – हे आम के वृक्ष! तुम्हारे वे दिन बीत गए हैं, जो फूल, सुगन्ध एवं फलों से भरपूर थे, परन्तु आश्चर्य की बात है कि तुम अब भी लोगों के अत्यधिक ताप को छाया से ही दूर करते हो।

↔

श्लोक-5 - "मूले भुजङ्गैः .... समन्तात्॥"

अन्वयः- भुजङ्गैः, मूलम् (आश्रितम्); प्लवङ्गैः, शिखरम् (आश्रितम्); विहङ्गैः, शाखाः (आश्रिताः); भृङ्गैः, कुसुमानि (आश्रितानि); चन्दनपादपस्य, तत्, एव, न, अस्ति, यत्, समन्तात्, सत्त्व-भरैः, न, आश्रितम्॥

अर्थः- चन्दन के वृक्ष की जड़ सर्पों के द्वारा; चोटियाँ बन्दरों के द्वारा; शाखाएँ पक्षियों के द्वारा; फूल भौंरों के द्वारा आश्रित होते हैं (आश्रय बनाए जाते हैं); चन्दन के वृक्ष का कोई भी भाग ऐसा नहीं है, जो चारों ओर से किसी प्राणि-समूह के द्वारा आश्रय न बनाया गया हो (अर्थात् चन्दन के वृक्ष के हर भाग में कोई-न-कोई प्राणी आश्रय लेता है)॥

↔

श्लोक-6 - "निम्ब! त्वदीयकटुता .... तावकगीतकानि॥"

अन्वयः – निम्ब, यदि त्वदीय-कटुता दाह-हन्त्री (अस्ति), मूढ-मनुजाः, तव, दोष-गाथाः, गायन्तु। मित्रवर, तपन-उष्ण-पित्त-तापैः, तप्ताः, ते, एव, तावक-गीतकानि, गास्यन्ति॥

अर्थ: - (श्लोक-6.) - हे नीम के वृक्ष, यदि तेरी कड़वाहट पित्त के ताप को शान्त करने वाली है, तो मूर्ख-मनुष्य (भले ही) तेरे दोषों की कथाओं का गायन करें, पर हे श्रेष्ठ मित्र! सूर्य के समान तपाने वाले पित्त की गर्मी (ताप) से पीड़ित (तप्त) होने पर, वे ही लोग तुम्हारे गीतों को गाएँगे।

↩

श्लोक-7. - " धत्ते भरं - - - - - - - - - - - - - - - तरवे नमोऽस्तु ॥"

अन्वय: - (यः) कुसुम-पत्र-फलावलीनां भरम् धत्ते, घर्मव्यथां, शीतभवां, रुजम्, च, वहति। यः, च, अन्यसुखस्य, हेतोः, सर्वम्, अर्पयति, तस्मै, वदान्य-गुरवे, तरवे, नमः, अस्तु ॥

अर्थ: - (जो) फूल-पत्तों एवं फलों के समूह के भार को धारण करता है, गर्मी की पीड़ा एवं सर्दी से होने वाले कष्ट को जो सहता है; दूसरों के सुख के लिए जो अपना सब कुछ समर्पित कर देता है, ऐसे उस उदारों में श्रेष्ठ, वृक्ष को नमस्कार है।

↩